धरा ये चन्दन सदृश शीतल र

डॉ० आशाराम त्रिपाठी

प्रथम संस्करण

धरा ये चन्दन सदृश शीतल रहे

2002

☆ मूल्य : 100/

☆ मुखपृष्ठ कु जया त्रिपाठी

☆ रचयिता एवं प्रकाशक ☆
डॉ० आशाराम त्रिपाठी

Dhara Ye Chandan Sadrish Sheetal Rahe

Lyrics by **Dr. Asha Ram Tripathi**

Published by 'Dr Asha Ram Tripathi', C-2/1, 'O' Vishesh Khand-2, Gomti Nagar, Lucknow.

Printed by Printech B-1, Himanshu Sadan, 5 Park Road, Lucknow

Cover Page **Km. Jaya Tripathi**

Price Rs 100/

अपनी बात

बचपन से ही मेरे मन मे जन्मभूमि, मातृभूमि तथा देश के प्रति, प्रकृति के प्रति अतीव श्रद्धा है। **'धरा ये चन्दन सदृश शीतल रहे'** जननी, जन्मभूमि, प्रकृति, पर्यावरण के प्रति समय–समय पर समर्पित गीत सुमनो की एक माला ही तो है। इस गीतमालिका मे हर वर्ग के भाई बहनो की बात है। आज देश के समक्ष जो चुनौतियाँ है – अन्दर और बाहर की, पर्यावरण प्रदूषण की उनका तन, मन, धन से सामना करने का समय आ गया है। ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य, छल, कपट रूपी शत्रुओ पर विजय प्राप्त करके एक तन, एक मन एक प्राण होकर राष्ट्र के सम्मान की रक्षा करनी है, माँ स्वरूपा धरा की हरीतिमा को बचाना है, विश्व भर मे जो युद्ध के बादल घिरे हैं, उनसे मानवता को मुक्ति दिलाने का समय आ गया है।

हमे अपने महान् आदर्शो, अपनी सस्कृति के मूल मन्त्रो तथा प्राचीन गौरव की रक्षा करनी है। जीवन मे सम्मान ही सब कुछ है। यदि सम्मान नही है तो जीवन ही व्यर्थ है। इन्ही महत्त्वपूर्ण बिन्दुओ को ध्यान मे रखकर उन्ही गीतो को यहॉ प्रस्तुत किया गया है जो भारत के गरिमामय व्यक्तित्त्व को आलोकित करते है। आज राष्ट्र को एकता की आवश्यकता है क्योकि बिना एकता के महान् राष्ट्र के सम्मान की रक्षा करना, उसके गौरव की रक्षा करना, उसके पर्यावरण की रक्षा करना सपना ही होगा।

ऋग्वेद के मन्त्र 'सगच्छध्व सवदध्व स वो मनासि जानताम्'
तथा 'समानी व आकूति समाना हृदयानि व।
समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति।।'

हमे अपने प्रिय देश के सम्मान की प्राणपण से रक्षा करने के लिए सदा प्रेरित करते रहते है। राष्ट्रीय भावना, प्राकृतिक सुषमा, पर्यावरण सुरक्षा के प्रति जागरूकता से ओत प्रोत गीत आपको पसन्द आएँगे, ऐसी आशा है। आपके स्वर मे स्वर मिलाकर इस गीत के माध्यम से मै भी कहूँगा –

'धरा ये चन्दन सदृश शीतल रहे'

समर्पण

'स्वाभिमान ही धन है अपना
स्वाभिमान ही जीवन।
पौरुष अपना जीवन साथी
वन्दनीय है कण कण।
सन्त फकीरो की यह धरती
इसको सदा नमन।। –

**घर बाहर की अनेक समस्याओ से
संघर्षरत प्यारे भारतवर्ष को
समर्पित है गीतमालिका –**

'धरा ये चन्दन सदृश शीतल रहे'

– *आशाराम त्रिपाठी*

सकेत

म	विवरण	पृष्ठ
1	वरदे	7
2	मॉ शारदे	8
3	मॉ तुम्हारे चरणरज की अर्चना	10
4	मान की रक्षा करेंगे, शान की रक्षा करेगे	11
5	हम तेरे सम्मान की रक्षा करेगे देश	12
6	रोशनी तुम बनो	14
7.	वसुन्धरा कल्याणी	15
8	आज दिन है सुहाना	17
9	यह महापर्व उल्लास भरा	18
10	याद करो	19
11	ग्राम देवता	21
12	प्यार का गॉव	22
13.	महान देश की महानता	24
14	गॉव, खेत, खलिहानो वाला देश	25
15.	वही तो हमारा देश प्यारा है	26
16	जो सबके जीवन मे प्यार भरदे	28
17	प्रेम के गीत गाते चले	29
18	नव निर्माण करो	31
19.	जोडता हूँ	33
20	कहॉ आ गये है	35
21.	अब न जाने क्यू	37
22.	माटी का सलोनापन	38
23.	सपने होने लगे	40
24	याद बहुत आती है	41
25.	फूल सा मन है हमारा	43
26.	मोर पखी भोर	45
27.	राह ऐसी भी होती है	47
28.	भक्त प्रह्लाद जैसा ललन चाहिए	48
29.	पर्वमहान् (स्वाधीनता दिवस)	49

वरदे

जन जन के हृदय जलधि मे।
आत्मा के शुभ्र कमल पर
माँ तेरे शोभित पदतल
मंगल बरसाएं झर झर।

वीणा के शोभन स्वर से
जग में नूतनता आए,
माँ ज्ञानराशि से तेरे
अग जग चेतन हो जाए।

बन मलय पवन का झोंका
माँ सब को शीतल कर दे।
जो दीन दु:खी है उनको
भय रहित अकम्पित वरदे।

शान्ति, मंगलदायिनी माँ,
ज्ञाननिधि विस्तारिणी माँ,
विश्वपथ ज्योतित करो
अज्ञान की बीते अमा।

मॉ शारदे !

शारदे !
शारदे !
मॉ शारदे !
नेह भर दो, प्रेम भर दो
और भर दो चेतना।
दूर करते है अँधेरा
दीप है हम।

दया, ममता से भरो मॉ,
सत्य, समता से भरो मॉ,
थके, हारे हैं यहॉ जो
हरे उनकी वेदना,
गीत है हम।

ज्ञान से हमको भरो मॉ,
मान से हमको भरो माँ,
दूर सकट हों धरा के
यही अपनी भावना
मीत है हम।

कण्टका न भी खिल मा
आँधिया म भी मिले माँ,
काम आएँ हम सभी के
करो पूरी कामना,
जीत है हम।
दीप है हम।
गीत है हम।
गीत है हम।।

मॉ तुम्हारे चरणरज की अर्च

मॉ तुम्हारे चरणरज की अर्चना,
मॉ तुम्हारे पदकमल की वन्दना।
तुम अँधेरे मे उजाला बन चमकती,
कटकों के बीच फूलो सी दमकती।
तुम हो मलयानिल तुम्हारी वन्दना,
अर्चना।
मॉ तुम्हारे चरणरज की अर्चना,
मॉ तुम्हारे पदकमल की वन्दना।

नेह, ममता से भरा ऑचल तुम्हारा,
प्यार बरसाता सदा ऑचल तुम्हारा।
वारि सी शीतल तुम्हारी अर्चना,
वन्दना।
मॉ तुम्हारे चरणरज की अर्चना।
मॉ तुम्हारे पदकमल की वन्दना।

एक रहने की हमे तुम सीख देती।
मीत बनने की हमे तुम सीख देती।
तुम सुधा की धार शत शत वन्दना,
अर्चना।।
मॉ तुम्हारे चरणरज की अर्चना।
मॉ तुम्हारे पद कमल की वन्दना।।

की रक्षा करेगे, शान की रक्षा करेंगे

ओ मेरे प्रिय देश तेरी अर्चना।
ओ अमृतमय देश तेरी वन्दना।

कह रही गौरव कथा ये पर्वतो की श्रेणियाँ।
हर नदी है बह रही करती हुई अठखेलियाँ।
पवन पावन कर रहा सबके हृदय को चूमकर।
सिन्धु तेरे पद पखारे शान्त हो नित झूमकर।
निशा का तम चीरती प्यारी उषा की वन्दना।
अर्चना।
ओ मेरे प्रिय देश तेरी वन्दना।
ओ अमृतमय देश तेरी अर्चना।

एक रहकर हम तुम्हारे मान की रक्षा करेंगे।
स्वेद के दीपक जलाकर हम तेरी पूजा करेगे।
शीश सुमनो से तुम्हारी हम करे आराधना।
वन्दना।
ओ मेरे प्रिय देश तेरी अर्चना।
ओ अमृतमय देश तेरी वन्दना।

हम तेरे सम्मान की रक्षा करे

वन्दना।
अर्चना।
वन्दना हे देश, मेरे देश मेरे देश।
अर्चना हे देश, मेरे देश मेरे देश।

हम अहिंसा के पुजारी,
शान्ति, करुणा हमे प्यारी,
विश्व है परिवार प्यारा,
हम बहाते प्रेमधारा,
यही शुभ सन्देश।
यही शुभ सन्देश प्यारे देश प्यारे देश।
वन्दना हे देश, मेरे देश मेरे देश,
अर्चना ... ...

हम महकते फूल हैं
हमसे सुगन्धित है धरा।
हमसे डरते शूल हैं
नव प्रेम है हममें भरा।
सब सुखी हो, स्वस्थ हों सब,
एक तन, मन, प्राण।

एक तन, मन, प्राण मेरे देश मेरे देश।
वन्दना हे देश मेरे देश मेरे देश
अर्चना .

हम सुमन, हम कंटकों के बीच खिलते हैं।
प्रेम से हम दुश्मनों के गले मिलते हैं।
पर्वतो पर राह अपनी,
सागरो मे थाह अपनी,
राह अपनी है गगन में,
सफलता अपनी लगन मे,
आँधियाँ राहें बुहारें,
बिजलियाँ हमको निहारे,
हम तेरे सम्मान की रक्षा करेगे देश।
रक्षा करेगे देश, मेरे देश मेरे देश।

वन्दना हे देश, मेरे देश मेरे देश।
अर्चना हे देश, मेरे देश मेरे देश।

रोशनी तुम बनो

भारती के ललन,
देश के हो नयन,
है अँधेरी डगर
रोशनी तुम बनो।

राह मे पर्वतों के शिखर जब मिले,
घोर तूफॉ तुम्हें लेके पीछे चले।
है लगन, धैर्य तेरे तो भाई बहन
राह छोड़ो नही, दृढव्रती तुम बनो।
भारती के ललन.. ..।

रात जब तुम को पथ मे डराने लगे,
लम्बी बरसात तन को कँपाने लगे,
जब न सूझे जमी और न सूझे गगन,
मार्ग दर्शन करो चॉदनी तुम बनो।
भारती के ललन . ।

देश पर हो निछावर ये तन और मन
एकता के लिए हो तुम्हारा नमन।
यह तुम्हारा वतन, यह तुम्हारा चमन
इस चमन को सँवारो, सुमन तुम बनो।
भारती के ललन . ।

वसुन्धरा कल्याणी

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर से.
सागर की लहरों से, नभ से,
गूँजे अभिनव वाणी,
मातृभूमि तू, जन्मभूमि तू,
वसुन्धरा कल्याणी।
हे मातृभूमि वन्दन।
हे जन्मभूमि वन्दन।

बाँह पसारे पर्वत माला,
चरण पखारे सागर,
पवन बुहारे देहरी देहरी,
गाये नटवर नागर।
गाँव गाँव है नन्दन नन्दन,
माटी चन्दन, चन्दन।
हे मातृभूमि वन्दन।
हे जन्मभूमि वन्दन।

शिला समय की कहे कहानी,
चरण--चिह्न बलिदानी।
झुके नहीं हैं शीश हमारे
जाने दुनिया सारी

प्रेम एकता की है थाती
अर्पित तन, मन, धन।
हे मातृभूमि वन्दन।
हे जन्मभूमि वन्दन।

स्वाभिमान ही धन है अपना,
स्वाभिमान ही जीवन।
पौरुष अपना जीवन साथी
वन्दनीय है कण–कण।
सन्त फकीरो की यह धरती
इसको सदा नमन।
हे मातृभूमि वन्दन।
हे जन्मभूमि वन्दन।

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर से
गूँजे अभिनव वाणी,
मातृभूमि तू जन्मभूमि तू
वसुन्धरा कल्याणी।
हे मातृभूमि वन्दन।
हे जन्मभूमि वन्दन।

आज दिन है सुहाना

आज दिन है सुहाना,
आज मौसम सुहाना।
मन का मोर कही नाचे,
कही गाए मीठा गाना।
आज दिन है सुहाना।

ऊँचे शिखर पर आज लहरे तिरगा।
मुक्त पवन के संग में फहरे तिरंगा।
झूम--झूम गाए प्यारा देश आज गाना
न्यारा देश आज गाना।
आज दिन है सुहाना।।

रह रहकर आज आए ऑखों में पानी।
आज याद आए उन शहीदों की कहानी
दे दी अपनी जवानी।
ये तो मिट्टी बलिदानी जो बनाती हे दीवाना
आज गाए मीठा गाना।
इसका बाना सुहाना।
आज दिन है सुहाना।
आज मौसम सुहाना
मन का मोर कही नाचे,
कहीं गाये मीठा गाना।
आज दिन है सुहाना।

यह महापर्व उल्लास भरा

अमर रहे अपनी स्वतन्त्रता
शुभ्र सूर्य चमके।
आज वतन का कण–कण,
अनुपम सोना बन दमके,
धरा यह सोना बन दमके।
तरुण रवि स्वाधीनता के वन्दना है वन्दना।
शीश सुमनो, गीत सुमनों से करें हम अर्चना।

अब न हो अज्ञान रजनी, अब न पथ भूले कोई।
राष्ट्रहित की, विश्वहित की भावनाएँ हो नयी।
शक्ति भर दो, भक्ति भर दो, दो हमें नव चेतना।
तरुण रवि स्वाधीनता के वन्दना है वन्दना।
शीश सुमनों, गीत सुमनो से करें हम अर्चना।।

याद करो

मेरे देश के लोगो याद करो
कुर्बानी अमर शहीदों की।
कुर्बानी अमर शहीदों की।

यह महापर्व उल्लासभरा,
इसी देश धरा मुस्काती है
अम्बर के राग में झूम झूम
श्यामा देखो इठलाती है
झूमा जवान।
झूमा किसान।
झूमा जवान, झूमा किसान
झूमते सभी नर, नारी हैं।
जिनकी बाहों मे संवर रही
अपनी स्वतन्त्रता प्यारी है।
मेरे देश के ....।

धरती अपनी
अम्बर अपना।
है आज वतन प्यारा अपना।
वह पूरा हुआ महान कार्य
लगता था जो सपना सपना।

झूमा विशाल

झूमा महान,

झूमा विशाल, झूमा महान, हिमवान आज बलशाली है।

भारत के अनुपम गौरव की करता रहता रखवाली है।

मेरे देश के . .. . ।

बढते है कदम बढते ही रहे,

उन्नति पथ पर चलते ही रहे,

हिल मिल करके सब काम करें,

दुनिया मे देश का नाम करे,

चमका महान स्वाधीन सूर्य हर कोना धरती का चमका।

धरती के नजारे देख जरा आँचल इसका दमका दमंका।

मेरे देश के .. ।

ग्राम देवता

ज्ञानी गुरु भारत से जो संसार ने शिक्षा पायी।
उसी ज्ञान गगा की धारा तरुणाई है लायी।
गगा पावन गॉव मे,
मानवता की छॉव मे,
नयी चेतना की फसले उपजाता ग्राम देवता।
उठा है ग्रामदेवता, जगा है ग्रामदेवता।।

माटी को कंचन करने वाला अब दीन नही है।
सब का पालनकर्ता, अब वह हीन नही है।
श्रम, एका का गान है,
आया नया विहान है।
नयी राह अब स्वय बनाकर चलता ग्रामदेवता।
उठा है ग्रामदेवता, जगा है ग्रामदेवता।।

चका, चौंध का आकर्षण उसके मन मे अब रहा नही।
प्रगतिचरण है, विजयवरण अब, यहॉ, वहॉ है कहॉ नही।
सोना उपजे खेत मे,
ज्ञान नदी की रेत में,
देश बढ रहा उसके बल पर धन्य धन्य है देवता।
उठा है ग्रामदेवता, जगा है ग्राम देवता।।

प्यार का गॉव

आओ वापस चले प्यार के गॉव मे
जिन्दगी की नयी रोशनी है जहॉ।
ये सँवारे हुए रूप वाले सुमन,
गन्ध इनमे नही बस चुभन ही चुभन।
ढूढते जिस नजारे को हम और तुम।
वह नजारा नही मिल सकेगा यहाँ।
आओ वपास चलें .. . .

है यहॉ आज पसरी अजब सी घुटन,
यह घुटन तोड़ती सबके तन और मन।
देखकर दूसरों को है होती जलन।
इस जलन से भला सुख मिलेगा कहॉ,
आओ वपास चले .. .

दूर तक हैं नजारे नहीं कुछ कमी।
मिल रहे है जहॉ आसमॉ और ज़मी।
देहली पर तुम्हें प्यार हँसता मिले
जो कभी भी नहीं मिल सकेगा यहाँ।
आओ वपास चलें.. . .. .

दूर होगी तुम्हारी ये तन्हाइयाँ,
खींच लेंगी तुम्हें जब वे अमरइयाँ।
सारे दुख दूर हों माँ का आँचल मिले,
ऐसा सुख स्वर्ग में भी मिलेगा कहाँ।
आओ वापस चले प्यार के गाँव में,
ज़िन्दगी की नयी रोशनी है जहाँ।

महान देश की महानता

महान देश की महानता तुम्हें पुकारती,
सभी को सूर्य की तरुण किरण प्रकाश दे रही।

अभी क्रमिक विकास का प्रकाश हो रहा यहाँ,
सभी हमारे मित्र हो – प्रयास हो रहा यहाँ,
इसी महान कार्य के लिए धरा पुकारती,
सुहासिनी विजय वरण तुम्हारा आज कर रही।
महान देश की . . ..

भुला दो सारे भेदभाव एकता की छाँव में,
अभाव की निशा न हो समानता के गाँव मे,
झुका दो राह में मिलें जो पर्वतो की श्रेणियाँ,
गगन की राह आज तो वसुन्धरा से मिल रही।
महान देश की . . .

प्रदीप स्वेद विन्दु का सदा यहाँ जला करे,
मनुष्यता प्रबुद्ध हो जो विश्व का भला करे।
बना दो स्वर्ग सी धरा, प्रसन्न आज भारती,
सुदृढ़ हो राष्ट्रएकता हमारी कामना यही।।
महान देश की ....

गाँव खेत खलिहानों वाला देश

गाँव खेत खलिहानो वाला देश,
रंग बिरंगे परिधानो का देश,
उच्च हिमालय जिसके सिर का ताज है
सुन्दर शोभाधाम वही गिरिराज है।
दक्षिण मे लहराता सागरराज है,
जिसकी यशोमयी गाथा पर नाज़ है।
गंगा, कृष्णा, कावेरी का देश।
मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों का देश।
गाँव, खेत, खलिहानो वाला देश।

मानवता के लिए भरा अनुराग है
शान्ति, अहिंसा, श्रम, सेवा से राग है।
हर सुख दु:ख में जनगणमन का नाम है।
वसुधा के कणकण से अति अनुराग है।
यह बलिदानी माटी वाला देश।
यह फूलों की घाटी वाला देश।
विविध बोलियों, भाषाओ का देश
रंग बिरंगे परिधानो का देश।
गाँव, खेत, खलिहानों वाला देश।

वही तो हमारा देश प्यारा है

सोधी सी हवा है जहॉं,
फूलों की अदा है जहॉं
वही तो हमारा देश प्यारा है।

ऊँचे ऊँचे पर्वतो की ठण्डी ठण्डी धारा,
ढूढने चली है देखो सिन्धु का किनारा।
बड़ा है न छोटा जहॉं,
प्यार है न रोता जहॉं,
बन्धुता का नारा जग से न्यारा है,
वही तो हमारा देश प्यारा है। सोधी सी हवा ....

उद्यम के पेड की ये बढती हुई डालियाँ,
अन्न से लदी हैं कैसी लम्बी लम्बी बालियॉं।
योग भोग प्यारे जहॉं,
लोग हैं निराले जहॉं,
वही तो सलोना देश न्यारा है
वही तो हमारा देश प्यारा है।
सोधी सी हवा है जहॉं,
फूलो की अदा है जहॉं,
वही तो हमारा देश प्यारा है।

आज का उत्कर्ष देखो कितना सुहाना।
इसकी महानता मे है चाद है लगाना।
ममता की धूल जहाँ,
नदी के दुकूल जहॉ,
निर्बलो का बनता जो सहारा है,
वही तो हमारा देश प्यारा है।
सोधी सी हवा है जहाँ फूलों की अदा है जहॉ
वही तो हमारा देश प्यारा है।

जो सबके जीवन में प्यार भर

जो सबके जीवन में प्यार भर दे
वही है मानव, वही पुजारी।

जो धर्म के नाम पर न झगड़े,
जो कर्म के नाम पर न बिगड़े,
जो पत्थरों को भी मोम कर दे,
वही है मानव, वही पुजारी।
जो सबके जीवन मे प्यार भर दे।
वही है मानव, वही पुजारी।

जो बुजदिलो में भी जोश भर दे,
जो ठण्डे पानी को आग कर दे,
जो भूले भटकों को राह कर दे
वही है मानव, वही पुजारी।
जो सबके जीवन मे प्यार भर दे,
वही है मानव, वही पुजारी।

प्रेम के गीत गाते चले

प्रेम के गीत गाते चले,
हम प्रगति गीत गाते चले,
पथ है कठिनाइयों से भरा,
पथ है तन्हाइयों से भरा,
किन्तु हम मे लगन,
क्या करेगी जलन,
हम तो सबसे हैं मिलते गले।
प्रेम के गीत गाते चले
हम प्रगति गीत गाते चले।

स्वार्थ सबसे बडा शत्रु है,
प्रेम सबसे बड़ा मित्र है,
मित्र ही सब यहॉ,
शत्रु कोई कहॉ,
एकता से ही विपदा टले।
प्रेम के गीत गाते चले।
हम प्रगति गीत गाते चले।

प्यार करना बड़ा कर्म है,
मिलके रहना बड़ा धर्म है,
सन्तबानी यही।
ग्रन्थबानी यही।
हम फकीरो के संग, संग चले।
प्रेम के गीत गाते चले।
हम प्रगति गीत गाते चले।

नव निर्माण करो

सृजन की वेला है
नव निर्माण करो।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई,
आपस में सब भाई भाई।
जाति, धर्म से ऊपर उठकर,
मानवता के बनो पुजारी।
मानव सेवा ईश्वर सेवा
सब की पीर हरो,
नव निर्माण करो।
सृजन की वेला है
नव निर्माण करो।

मन में, वाणी में, कर्मो मे
एकरूपता आए।
कार्य हमारे ऐसे हो
जो सबके मन को भाएँ,
छद्म वेश मे छलना अनुचित है,
गलत कदम यदि कहना समुचित है,
राष्ट्र हमारा सबल बने
ऐसे कुछ काम करो
नव निर्माण करो।

अनुशासन हो, काम अधिक हो,
यही राष्ट्र सन्देश।
उन्नति ही करते रहना है
यह महान् उपदेश।
सभी योजनाएँ पूरी हो,
हमे यत्न करना है
जब तक पूरा लक्ष्य न होगा
चलते ही रहना है।
सभी तिरगे के नीचे आकर प्रण आज करो
नव निर्माण करो।
सृजन की वेला है
नव निर्माण करो।।

कहाँ आ गये हैं।

चले थे कहा से कहाँ आ गये हैं
जो पहले बुरे थे, वही भा गये हैं।
थी धरती बिछौना, था नभ शामियाना,
सदा राष्ट्र सेवा, न कोई बहाना।
जो चाहा, जो सोचा वो सब पा गये है,
चले थे कहाँ से कहाँ आ गये हैं।

यहाँ सब है अपने, नहीं है पराये,
सदा दीन दुखियों के ही काम आए।
सदा देश हित के मधुर गीत गाये।
कभी मुश्किलो मे नहीं सिर झुकाए।
विपत् सिन्धु के पार हम आ गये है
चले थे कहाँ से कहाँ आ गये हैं।

बडा हो गया स्वार्थ, लिप्सा बडी है,
जहाँ प्रेम था, आज हिसा बढी है,
जहाँ देश हित था, वहाँ आत्म हित है,
हमारा बडा मन हुआ सकुचित है,
दिलो मे तो ईर्ष्या, कपट घर गये है
चले थे कहाँ से, कहाँ आ गये है।

जहा विश्व परिवार था एक अनूठा,
वही स्वार्थ से हो गया आज झूठा,
न लज्जा, न ममता, न करुणा की बातें,
सदा सम्पदा प्राप्त करने की घातें,
पुन: आशा विश्वास घर आ गये है
चले थे कहॉ से कहाँ आ गये है।।

जोडता हूँ

जोडता हूँ जिन्दगी के तार मै
इनके लिए, उनके लिए, सबके लिए।
जो जिए अपने लिये ही क्या जिए,
जो पिए विष भी अमृतरस ही पिए,
ज़िन्दगी हँसते हँसाते ही जिए
इनके लिए, उनके लिए, सबके लिए।
जोडता हूँ .. . . ।

तार क्यों टूटे हुए इस नगर के
तार क्यों टूटे हुए इस सफर के,
कौन सी आँधी चली भूली डगर,
लक्ष्य पथ से दूर हैं सब भटककर
बिजलियों की ज्योति में पथ तय किये,
इनके लिए, उनके लिए, सबके लिए।
जोड़ता हूँ ....।

कौन है अपना पराया कौन है ?
प्रश्न सुन वातावरण ही मौन है,
हम कहें किससे गुनाहों की कथा,
सुन जिसे बढती है तन--मन की व्यथा,
सदा एका के लिए जीवन जिए,
इनके लिए, उनके लिए, सबके लिए
जोडता हूँ .. . . ।

अब न ज़ाने क्यू

अब न जाने क्यू बार–बार
मुझसे ही पूछता है
मेरा हठी मन।
क्यूं उगाले आज तुम
बौने विचारों की फसल
बौने विचारों की फसल।
तब तुम्हारा मन बड़ा था
दिल बड़ा था,
तुम बड़े थे
अब बताओं क्या हुआ तुमको
तुम्हारा कद,
तुम्हारा पद,
तुम्हारा मन
तुम्हारा दिल
सभी बौने नजर आते।
तब तुम नही देख सकते थे ऑसू
एक एक ऑसू
भिगोता था तन–मन।
अब बताओ क्या हुआ तुमको
करोड़ों आँसुओ की धार पर
पुरइन के पत्ते सरीखे
निर्लिप्त नजर आते हो
अब बताओ क्या हुआ तुमको।
बताओ क्या हुआ तुमको।

माटी का सलोनाप

जैसे–जैसे माटी का
घट रहा सलोनापन
छीन रहा है कोई
राधा–मोहन का बचपन
घट रहा सलोनापन।

बाबा की वह नीम कहाँ
जिस पर झूले थे पड़ते
रग विरगे पछी जिस पर
पाठ प्रेम के पढते।
नही हो रहा माँ के,
तुलसी बिरवे का दर्शन
घट रहा सलोनापन।
जैसे–जैसे.. ..

नानी नहीं कहानी कहती
माँ न सुनाए लोरी,
चन्दा मामा को न बुलाएँ
नन्ही बाहें गोरी।
गाँव किनारे खडा शिवालय
बिन पूजा अर्चन
घट रहा सलोनापन।
जैसे–जैसे ..

छाँह न बरगद की मिलती है
ठॉव ठाँव पर न्यारी,
मीठा दर्द हरन कर लें जो
रहीं न बातें प्यारी।
नकली चेहरे देख देखकर
शर्माता दर्पन
घट रहा सलोनापन।
जैसे–जैसे......

किसी सरोवर पर न दिखे अब
सखियो की वह टोली
राधा बैठी है मन मारे
किससे करे ठिठोली,
विश्वासों की राह न सूझे
बढते नही चरन,
घट रहा सलोनापन।
जैसे–जैसे माटी का
घट रहा सलोनापन,
छीन रहा है कोई
राधा–मोहन का बचपन।
घट रहा सलोनापन।

सपने होने लगे

ममता, नेह, दया करुणा सब
सपने होने लगे।
कही अब अपने खोने लगे।

छलने लगी प्रेम की मूरत,
कटने लगी दया की सूरत,
विश्वासो के तरुतर भी तो
बौने हो लगे।
कही अब अपने खोने लगे।
ममता, नेह .... ।

साया साथ न दे पाती है,
माया भी अब शर्माती है।
भीड़ भरे इस महानगर में
एकला होने लगे।
कही अब अपने खोने लगे।
ममता, नेह .... ।

एक दर्द का गाँव बचा था,
वहीं हमारा ठाँव बचा था,
चन्दन सी माटी में अब तो
विष सब बोने लगे
कही अब अपने खोने लगे।
ममता, नेह, दया, करुणा सब
सपने होने लगे,
कही अब अपने खोने लगे।

याद बहुत आती है

बापू, याद बहुत आती है,
तेरी याद बहुत आती है।

सत्य, अहिंसा का पथ तेरा,
असहायों को दिया बसेरा,
दीन दुखी को गले लगाया,
पाप कर्म तो कभी न भाया।
जब जब हिंसा पैर पसारे,
झूठी बातें साँझ सकारे,
झगड़े झंझट इनके उनके
सुन सुन करके माथा ठनके।
स्वार्थ बड़ा हो गया देश से
काम करे सब बिना विचारे
कथनी करनी में अन्तर है
कौन बचाए कौन उबारे।
तेरी बातों को गुन गुनकर
बापू, याद बहुत आती है
तेरी याद बहुत आती है
बापू, याद बहुत आती है।

जाति धर्म भाषा के झगड़े
देश बाँटते कभी न थकते
यही ढंग यदि रहा हमारा,
कैसे पूरे होंगे सपने।
बुरा देखते आज यहाँ सब,
बुरा बोलते आज यहाँ सब,
बुरा सुन रहे आज यहाँ सब,
ममता, नेह, दया करुणा सब
फुर्र हो गये बापू, अब तक।
रोता है विश्वास यहाँ पर
बंजर हुई हृदय की धरती,
करुणा फिरती द्वारे द्वारे
ममता चुप–चुप आहें भरती।
तेरे मधुमय आदर्शों की
बापू, याद बहुत आती है
तेरी याद बहुत आती है
बापू, याद बहुत आती है।

फूल सा मन है हमारा

(जर्मनी प्रवास (१६८४) मे जर्मनी के लोगों के सम्बन्ध मे लिखा गया गीत)

कंचनी काया दमकती,
फूल सी हँसती विहँसती,
गीत गाती चेतना के,
भूलते क्षण वेदना के,
श्रम अटल, विश्वास प्यारा,
साथ में साधन हमारा,
बीज बोते शान्ति के हम,
सुखकरी उस क्रान्ति के हम,
जो थकी–हारी मनुजता की व्यथा हरती।
कचनी काया – कंचनी काया।।

कारखानों मे मशीनें,
खेत में होते पसीने,
प्रेम की दुनिया बसाते,
जब घरों को लौट आते,
हर विषय मे दक्षता है,
घर, नगर में स्वच्छता है,
स्वच्छ है तन भी हमारा,
स्वच्छ है मन भी हमारा,
स्वच्छ तन–मन विश्व भी हो

वेदना इस देश की अपनी कथा कहत
कचनी काया – कचनी कारा।

हम बने फ़ौलाद के हैं
फूल सा मन है हमारा।
मित्रता के नाम पर
जीवन समर्पित है हमारा।
चाहते हैं हम धरा
बन जाय एक परिवार प्यारा
हो जहाँ पर प्यार, करुणा,
नेह, ममता का नजारा।
आज मानवता बहुत है यातना सहती।
कचनी काया, कचनी कारा।।

मोर पखी भोर

(बर्लिन से ड्रेस्डन जाते समय प्रात कालीन प्राकृतिक सुषमा से प्रभावित होकर १९८४ मे लिखा गया गीत)

मोरपंखी भोर मन को भा गयी,
एक अनबोली छटा सी छा गयी।

ले चली मन को, बनो की ओर, नभ की ओर,
अनछुई शोभा थिरकती है जहाँ सब ओर।
हरितवसना रूपसी का मृदु वदन,
देखकर मन कर उठा शत–शत नमन।
प्राणवीणातार झंकृत कर गयी,
मोर पंखी भोर।
मोर पंखी भोर मन को भा गयी।
एक अनबोली छटा सी छा गयी।

पीतवस्त्रो मे कहीं सिमटा वदन,
केशपाशो मे बँधे प्यासे नयन।
चूमता श्यामा धरित्री को गगन,
नाचता मनमोर होता है मगन।
कान में बाते प्रणय की कह गयी,
मोरपखी भोर।

मोरपखी भोर मन को भा गयी
एक अनबोली छटा सी छा गयी
लहलहाते खेत गाते गीत हैं,
दुःख मे सुख में वही तो मीत हैं,
पर्वतीमाला गले मे सोहती,
दिव्यता से रूपसी मन मोहती,
'प्रेम है सर्वस्व' हँसकर कह गयी
मोरपखी भोर।
मोरपंखी भोर मन को भा गयी,
एक अनबोली छटा सी छा गयी।

राह ऐसी भी होती है

दिख सके नही अवलम्ब राह ऐसी भी होती है।
मिल सके न जिसका अन्त चाह ऐसी भी होती है।
दावाग्नि दहकती वन मे, सारा वन जल जाता है।
निशदिन जलती वडवागिन सिन्धु सीमित हो जाता है।
निकले न धुएँ का अश दाह ऐसी भी होती है।
पत्थर रोने लग जायें आह ऐसी भी होती है।
दिख सके नही ....।

ठोकर खा खाकर मानव का व्यक्तित्व उभरता है।
तपने पर ही तो सोने का अस्तित्व निखरता है।
रौदी कलियाँ हो बिछी राह ऐसी भी होती है।
उनको आश्रय दे सके बाहेँ ऐसी भी होती है।
दिखं सके नही .... ।

सागर से भी गहरा, विशाल यह जग का सागर है।
भव सागर नपता जिससे ऐसा मन का सागर है।
मन का सागर नप जाय थाह ऐसी भी होती है।
सब ताप शान्त हो जायें छाँह ऐसी भी होती है।
दिख सके नही .. ..।

भक्त प्रह्लाद जैसा ललन चाहिए

हर पखेरू को नीला गगन चाहिए,
हर चमन को महकता सुमन चाहिए।
हर प्रवासी को उसका वतन चाहिए।
फलवती डाल को बस नमन चाहिए।
धैर्य की मूर्ति प्यारी धरा के लिये,
भक्त प्रह्लाद जैसा ललन चाहिए।।

होलिका–बन्धु तो अनगिनत हैं यहाँ,
भक्त प्रह्लाद प्यारा बताओ कहाँ।
यह मलिनता भरी होलिका कह रही,
एक प्रह्लाद् के ही लिए दह रही।
प्राप्त घट घट मे इस होलिका के लिए
भक्त प्रह्लाद जैसा ललन चाहिए।।

कामना है यही आज आह्लाद हो।
माँ का हर लाल गुणवान् प्रह्लाद हो।
हर अँधेरे सफर मे उजाला मिले,
हर बटोही को भी लक्ष्य उसका मिले।
यह धरा स्वर्ग हो बस इसी के लिए
आत्म बल चाहिए और लगन चाहिए।।

पर्वमहान (स्वाधीनता दिवस)

आज का पर्व महान है।
अनुपम इसकी शान है।

इसके व्रत में नन्दनवन वीरान हुआ था।
इस वन का हर खिला सुमन बलिदान हुआ था।
हँसते हँसते वीरों ने ये शीश दिये थे।
ललनाओं ने हँस हँस कर सिन्दूर दिये थे।
आज प्रतिष्ठित हो पाया फिर भारत का अभिमान है।
आज का पर्व महान है।
न्यारी इसकी शान है।

बलिदानों की गाथाएँ हम सदा लिखेंगे।
सागर की लहरों पर, नभ पर उन्हें लिखेंगे।
प्यारी धरती में अब श्रम के बीज उगेंगे।
श्रम के बल पर एक नया हम स्वर्ग रचेंगे।
आज यही है धर्म हमारा यही एक अभियान है।
आज का पर्व महान है।
न्यारी इसकी शान है।

हम सब मिलकर साथ रहेगे एक रहेगे।

उद्यम से अति कठिन काम को सरल करेंगे

अमर शहीदों के सपने हम पूर्ण करेगे।

दुखी दरिद्री रोगी का दुख दर्द हरेगे।

कभी नही झुकने पाएगा भारत का सम्मान है।

आज का पर्व महान है।

अनुपम इसकी शान है।

कविता निराला की

माँ भारती के वरद सुत,
उत्तुंग हिमगिरि शृङ्ग
कविता कामिनी की
सरस धारा जाह्नवी सी
कर रही उपकृत हमें नित
सोचने को विवश करती
ध्यान करलो, मनन करलो
बाँकपन उस काव्य सरिता का
करो मंथन, करो चिन्तन
हमे सन्देश देती।

नव किरण के तार से
जग की बँधी वीणा
करे झंकार जब
सध जाय अपनी गत
करो कर धार नवयुग की
भरो द्रुत इस जगत् में
इस जगत् मे।

सृष्टि के वरदान को समझो,
करो कुछ यूँ

कि जिससे
दूर हो जाए व्यथा
इस विश्व की,
है चाह कविता कामिनी की।
सुख मिला जिसको
दु खी मत करो उसको
नियम यद्यपि है यही
दुःख आता बाद सुख के
बिन बताए।
किन्तु बनकर तुम,
मृदुल तरुपत्रिका
कर दो विजन
हर लो तपन
इस थके हारे पथिक की।

कविता

कविता का कोई रंग नहीं
फिर भी उसका एक रंग है।
कविता का कोई रूप नहीं
फिर भी उसका एक रूप है
कविता न कभी हिन्दू होती,
कविता न कभी मुस्लिम होती।
कविता न किसी की निजी वस्तु
कविता कविता ही होती है।
है सार्वभौम सत्ता उसकी
मानवता से दृढ़ रिश्ता है।
वह सदा पक्षधर है उसकी
जो हर क्षण जलता पिसता है।

कि साजिश हो रही है

धरा को बाटने वालो
न बॉटो तुम आकाश,
नयी आशा, उमंगो से भरा
आकाश मन का
बॅट सकेगा क्या ?
कि साजिश हो रही है
बॉटने की व्योम को, .
और रोकने की समय को,
किन्तु जो बॅट जाय
वह आकाश कैसा
और जो रुक जाय
है वह समय कैसा

भूलकर साजिश
ज़रा सोचो
मिसाइल के तले है
आज की दुनिया
उसे मत ऑच दो।
आग से जो खेल
खेला जा रहा है

बन्द कर दो
मत उजाड़ो आज
इन नन्हे फरिश्तों की
हरी दुनिया,
भरी दुनिया,
भली दुनिया।

आदमी

आपने भेजा हमे है
ढूँढने को आदमी।
आदमी लाऊँ कहाँ से ?

आदमी खोटा हुआ
छोटा हुआ
बौना हुआ
आदमीयत है नहीं
लाऊँ कहाँ से आदमी ?

बदलता क्षण क्षण मुखौटा
कभी हँसता कभी रोता
आदमी बेदर्द है,
बेपर्द है,
बेशर्म है,
आज अपनी नस्ल को
बर्बाद करता आदमी
आदमी लाऊँ कहाँ से ?
आदमी लाऊँ कहाँ से?

ज़िम्मेदारी

आज विश्व मे फैल रहे
विषधर ही विषधर
एक प्रदूषण के विषधर ने
भयाक्रान्त कर डाला
पूरी मानवता को।
मानवता तो आश्रित है
इस सौम्य प्रकृति पर
किन्तु प्रकृति तो
विकृत हो गयी
विकृत हो रही
और विकृत होगी
हयवानों के विष से।
इस विषधर से
और भयानक
जाति धर्म का
वह विषधर है
जिसने बन्धु
समूचेपन में
आज बहा दी
नफरत की वह नदी
कि जिसके भँवर जाल में

फसी मनुजता
तड़प रही है
कौन बचाए
कौन उबारे।
नही उपाय सूझता कोई
विषपायी केवल कविता है।
इस विषधर को
दन्तहीन करने वाली
केवल कविता है,
अब कविता की जिम्मेदारी
बहुत बढी है।
बहुत बढी है।
जिम्मेदारी बहुत बढ़ी है।

कविता देखता हूँ

कविता पढ़ता नही
कविता गढ़ता नही
कविता देखता हूँ।
डबडबाए आँसू
देखते ही देखते
बूँदो मे बदल जाते हैं
आँखों से चलकर
पिचके गालों में
समा जाते है,
शब्द होठों पे आकर
रुक रुक जाते है
बोलना चाहते हैं
बोल नही पाते है
यही है कविता।
मैंने कविता से पूछा
आँसू गिरेगे तो मोती बनेगे?
मोती चाहते हो?
कविता ने इशारे से कहा।
नही कभी नही
मेरा संकल्पित मन बोला।
पिचके गालो से

ऑसू ढुलके
तपती धरती ने
समेटा ऑचल मे।
देखते ही देखते वे ही ऑसू
खिल उठे फूल बन के
यही तो है कविता।
कविता पढता नही,
कविता गढ़ता नही
कविता देखता हूँ
कविता देखता हूँ।।

मैं नदी हूँ

मैं नदी हू
और नद की धार मैं हूं
नाव मैं हूँ
नाव की पतवार मै हूँ,
जीवनी संजीवनी हूँ
मैं चराचर--स्वामिनी
मैं प्रकृति अभिमानिनी
सृष्टि हूँ मैं
वृष्टि हूँ मैं
और जल की बूँद हूँ मैं
मैं नदी हूँ।

एकता ही शक्ति अपनी,
एकता ही भक्ति अपनी,
एकता से लक्ष्य अपना
हो गया साकार सपना
शिक्षिता बन,
शिक्षिका बन,
रक्षिता बन,
रक्षिका बन,
एक तन हो

एक मन हो
अब नयी राहे बनाऊँगी
अब नयी दुनिया बसाऊँगी,
अब नयी दुनिया रचाऊँगी
मै नदी हूँ।

ज्ञान गरिमा की कहानी
शौर्य की गाथा पुरानी,
कर्म में विश्वास अपना
धर्म में विश्वास अपना
स्वस्थ रहकर
धैर्य रखकर
व्यस्त रहकर
अभय बनकर
अब सभी अधिकार माँगूगी
अब सभी सम्मान चाहूँगी।
मैं नदी हूँ।

श्रम ही सर्वस्व हमारा है

वन्दन है
अभिनन्दन है,
वन्दन है भारतमाता का,
भारत के नवनिर्माता का।

श्रम ही सेवा, श्रम ही पूजा
श्रम ही सर्वस्व हमारा है।
श्रम सीकर से जो दीप जले
उनसे पाया उजियारा है।
भारत माँ के उन्नत ललाट पर
केसरिया शुभ चन्दन है
वन्दन है।

यह देश महान बने अपना,
गौरव के शिखरों को चूमे।
पूरा हो जन–जन का सपना
ऐश्वर्य यहाँ नित नित झूमे।
प्राणों से अधिक सँवारा है,
यह देश हमारा नन्दन है।
वन्दन है।

जिसने नव तीर्थ दिये हमको
जिनसे यह देश महान हुआ
मानवता की गूँजी वाणी
जग मे अपना सम्मान हुआ।
जन–जन को जिसने प्रेम दिया
यह प्रेम हमारा स्पन्दन है।
वन्दन है।

एक और गंगा

बहुत प्रदूषित हो चुकी
यह प्रेम की गंगा।
अब और अधिक
प्रदूषित मत करो
डालकर इसमें
स्वार्थ नफरत
और फिरकापरस्ती का अच्छिष्ट।
ओ भागीरथ
अपने को जानने
पहचानने की कोशिश तो करो।
प्रदूषण से तुम हो गये हो विवेक शून्य,
तुम्हे सही सही दिखाई नहीं पडता
सही सही सुनाई नही पडता।
तुम भूल गये हो अपनी प्रतिज्ञा
तुम्हे याद नही है
भागीरथी को जन जन के बीच
लाने का उददेश्य।
अन्यथा क्यो बनते
गंगा की धारा के व्यवधान।
बहने दो इसकी अविरल धार
शीतल धार।

दूर हो जाय इस जग की जलन
तन मन की तपन
नहीं तो कोसती रहेगी
भावी पीढ़ियाँ।
इसलिए अब बहुत जरूरी
हो गया है
भगीरथ की पहचान के लिए
भागीरथी का अस्तित्व।
प्रेम की गंगा का अस्तित्व।

आज है गणतन्त्र दिन

आज है गणतन्त्र दिन इसकी अनूठी शान है।
पर्व यह अभिराम है, प्यारे वतन की आन है।
बाँह फैलाए हुए ये पर्वतों की श्रेणियाँ।
चरण को धोती हुई ये नीरनिधि की उर्मियाँ।
पवन के संग कह रहीं गम्भीर गिरि की घाटियाँ।
यह हमारा पर्व है, इस पर हमें अभिमान है।
आज है गणतन्त्र दिन .... आन है।

लहलहाते खेत सुमनों से भरी ये क्यारियाँ।
मरुथलों में मोहिनी, मनभावनी हरियालियाँ।
कह रही प्यारी अदा से लचकती तरुडालियाँ।
प्रेरणा का स्रोत है, यह पर्व माँ का मान है।
आज है गणतन्त्र दिन, इसकी अनूठी शान है।
पर्व यह अभिराम है, प्यारे वतन की आन है।

यह हिन्दी है

यह हिन्दी है
यह हिन्दी है,

यह बेल लगायी सन्तो ने
सीचा है पीर फकीरों ने,
जनजन में प्रेम जगाया है,
गीतो, भजनो, तकीरो ने,
भारत माता के मस्तक पर
सत् शिव सुन्दर की बिन्दी है।
यह हिन्दी है यह हिन्दी है।

खुसरो की मुकरी बन आयी
साखी बन गयी कबीरा की
तुलसी की यह पावन माला
कविता ने पहनी सूरा की
भाषा के उपवन मे अनुपम
सतरगी सुन्दर भृंगी है,
यह हिन्दी है,
यह हिन्दी है,

रसखान ने इसे सँवारा है,
आलम ने इसे दुलारा है,

यह ताज मुबारक की भाषा,
रसलीन की यह रसधारा है,
आलोक निराला का इसमें
आत्मा इसकी अरविन्दी है,
यह हिन्दी है,
यह हिन्दी है।

भूल न जाना राह

भाई रे गौरव का पथ अगम हुआ करता है।
पौरुष से वह भी सुगम हुआ करता है।

पथिक तू भूल न जाना राह।
कभी मत भरना मन में आह।
राह मे होगी कभी काली निशा
तब न सूझेगी तुम्हें कोई दिशा।
हार तू मत मानना, मत मानना।
है विपत् का काम पीछे टालना।
विपत् की करो नहीं परवाह,
कठिन श्रम से ढूँढो तुम राह। पथिक . .

राह रोके पर्वतो की श्रेणियाँ,
या नदी करती हुई अठखेलियाँ।
तोड़ दो गिरि को, नदी को बाँध दो।
धैर्य, साहस को तू अपने साध दो।
तू अपनी सुगम करो अब राह।
करो पूरी अब अपनी चाह। पथिक .

सिन्धु उफनाए तुम्हारी राह में।
हो न कुछ फिर भी कमी उत्साह मे।

छोड दे तूफा तुझे मजधार मे।
हो तेरा विश्वास निज पतवार मे।
जलधि की ले लो पूरी थाह।
पवन की करो नहीं परवाह।
पथिक तू भूल न जाना राह।
कभी मत भरना मन में आह।

दर्द

दर्द नहीं यदि है जीवन में
तो वह नीरस हो जाएगा।
तो वह नीरस हो जाएगा।

दर्द नहीं, संसार नहीं है,
दर्द नहीं तो प्यार नहीं है,
प्यार नहीं यदि रहा जगत् में,
सब कुछ सूना हो जाएगा।
तो वह नीरस हो जाएगा।
दर्द नहीं....

मानवता करुणा से पूछे
'दर्द लिए क्यूँ घूमा करती?'
'दर्द मेरी पहचान मानवी
आँचल तले छिपाए धरती।'
जिस दिन दर्द बिछड़ जाएगा
सब कुछ सूना हो जाएगा
सब कुछ नीरस हो जाएगा।
दर्द नहीं. . ...

दर्द समेटे कविता स्वर मे
दर्द बॉटती है घर--घर में
सुरसरि सम सबका हित करती,
सुख देकर सबके दुःख हरती
जब यह दर्द न होगा जग में
सब कुछ सूना हो जाएगा,
सब कुछ नीरस हो जाएगा।
दर्द नही . .. .

बीज धरा को बेध निकलता,
सीपो मे मोती है पलता।
कण--कण में है दर्द बसेरा,
काट अध उर उगे सबेरा।
अणु--अणु मे यदि दर्द न बोले
तो सब सूना हो जाएगा
तो सब नीरस हो जाएगा।
दर्द नहीं. ..

सृष्टि दर्द की ऋणी रही है
साक्षी सबकी दृष्टि रही है,
दर्द विकास करे नित नूतन
दर्द समेटे जड़ औ चेतन,
जिस दिन दर्द न होगा जग मे

तो सब सून हो जाएगा
तो सब नीरस हो जाएगा
दर्द नही .

दर्द कही नन्दन बनता है
दर्द कही चन्दन बनता है
दर्द कही कचन बनता है
दर्द कही स्यन्दन बनता है,
क्रन्दन यदि बन गया दर्द तो
सब कुछ सूना हो जाएगा,
सब कुछ नीरस हो जाएगा।
दर्द नही.... . .

जीवन का पर्याय दर्द है,
जीवन का सर्वस्व दर्द है,
दर्द सफर का सच्चा साथी
अपनी तो पहचान दर्द है।
संघर्षो में दर्द न हो तो
सब कुछ नीरस हो जाएगा,
सब कुछ सूना हो जाएगा
दर्द नहीं यदि है जीवन में
तो वह नीरस हो जाएगा
तो वह सूना हो जाएगा।
दर्द नही ... .

सुहानी छॉव मे तेरी

(अल्मोड़ा की प्राकृतिक सुषमा)

ताप से तपते हुए एक नगर से
आगया शीतल सुहानी छॉव मे तेरी,
सुहानी गोद में तेरी।

भर गया है मोद से मन
खिल उठा अति नेह से तन
मोहती है भ्रान्त मन को
सौम्यता तेरी
अपार हरीतिमा तेरी।
ताप से तपते हुए एक नगर से
आगया शीतल सुहानी छॉव मे तेरी
सुहानी गोद मे तेरी।

धूम से जो घिरा छिन—छिन
धूल से धूसरित निशि दिन
कर्णवेधी तीव्र ध्वनि वाले नगर से
आगया शीतल सुहानी छाँव मे तेरी
सुहानी गोद में तेरी।

ताप से तपते हुए एक नगर से
आगया शीतल सुहानी छाँव मे तेरी
सुहानी गोद मे तेरी।।

दूर तक फैला हुआ आचल तुम्हारा
प्यार से छूता हुआ सौन्दर्य सारा,
मोह लेती मन सदा अठखेलियॉ तेरी
रुपहली रश्मियॉ तेरी।
ताप से तपते हुए एक नगर से
आगया शीतल सुहानी छॉंव में तेरी
सुहानी गोद मे तेरी।।

कठिन श्रम की साधना,
विश्वास की आराधना,
विपुल वैभव बॉटती
थकती नही है कान्ति तेरी
दूर होती श्रान्ति मेरी

ताप से तपते हुए एक नगर से
आगया शीतल सुहानी छॉंव मे तेरी,
सुहानी गोद मे तेरी।।

प्रहरी पर्यावरण के

तरुवर पर्यावरण का कटता है दिनरात।
विषपायी सब हो गये वृद्ध, युवा, नवजात।।

तरुवर को मत काटिए, रखिए गले लगाय।
इनके सम कोउ मीत नहिं ढूढो जग में जाय।।

वायु प्रदूषित हो गया, जल भी रहा न पेय।
धुऑं धुऑं ही जगत मे, जीवन बनता हेय।।

माया के पीछे पडी दुनिया यह बौराय।
शोर शोर ही छा गया जी सबका घबराय।।

तन मन से बौने हुए, धनकी रही न थाह।
लोभ जलधि में डूबते कोई पकडे बॉह।।

नदियॉ तो नाले बनी, सिर धुनि धुनि पछतायॅ।
जनता तो रोती फिरे, अस्पताल में जाय।।

स्वर्ग सदृश इस देश को नरक बनाते आज।
पर्यावरण बिगाड़कर आती हमे न लाज।।

नर से पशुपक्षी भले, इनसे भी तरुवृन्द।
मलयानिल संजीवनी सुमन झरें मकरन्द।।

खेत बने घर आपके आप न बने महान।
गॉंव उजाड़े आपने, जाने सकल जहान।।

वन की शोभा सिंह से वन से सिंह सुहाय
वन कटकर ऊसर हुए, सिंह हुए असहाय।

शहर कर्णवेधी हुए दूषित जल के स्राव।
धुआँ उगलते रात दिन, करते मन पर घाव।।

धूप न चाँदी सी खिले, मिटे न मन की प्यास।
बेगाने होकर रहे, शहर न आवे रास।।

गाँव शहर हैं बन रहे, भट्ठे बनते खेत।
देख रूलाई आ रही, नहरें उगलें रेत।।

खाना पीना विष हुआ साँसे है बेचैन।
अन्धे अन्धे नैन हैं, रुँधे रुँधे से बैन।।

शहर पसरता गाँव में, देख कबीरा रोय।
आगे आगे देखिए, चादर ताने सोय।।

पर्वत नंगे हो रहे, कहें पुकार पुकार।
भस्मासुर मानव हुआ यह उसका उपहार।।

बौना बौना मन हुआ, बौनी बौनी सोच।
देख तुम्हारा बालपन, होता है सकोच।।

नर को आता देखकर काँपे तरु का गात।
मानव से दानव बना, करे कुठाराघात।।

गंगा है अघनाशिनी संस्कृति की आधार।
आज हुईं कृशगात हैं, लिए प्रदूषण भार।।

काली आँधी बह रही लिए प्रदूषण साथ
उद्योगो की भीड म रोते मल मल हाथ

मिट्टी, पानी हो गये, सभी विषाक्त गँभीर।
धरती संकट में पडी, सागर हुआ अधीर।।

प्रहरी पर्यावरण के हरते मन का ताप।
वन का कटना हो गया आज बडा अभिशाप।।

हरित वसन धरती रहे नीलवर्ण आकाश।
तेजपूर्ण हो सूर्य का अनुपम अमित प्रकाश।।

कामना

कामना
कामना,
कामना,
नागरी की यही कामना।
सारी लिपियाँ मिलें,
सबके दुःख बाँट ले,
विश्व मे शान्ति हो,
अब नयी क्रान्ति हो,
प्रेम से हो भरी भावना,
नागरी की यही कामना।
हम तुम्हारे बने,
तुम हमारे बनो,
हम तुम्हें जान लें,
तुम हमे जान लो,
सब मे भर दे यही भावना,
नागरी की यही कामना।
ज्ञानगगा बहे,
विश्व का हित करे,
सबका सम्मान हो,
अपनी पहचान हो,
आज फैले यही भावना,
नागरी की यही कामना।।

गॉव की फिर याद आयी

रेल से यात्रा सुहानी कर रहा था
सामने खिडकी खुली थी
और बाहर से हवा आयी सुहानी

विजन सी झलती।

खेत मे थे लहलहाते –
ईख, मक्का, धान के पौधे,
कही बगुले, कही पर मोर,
देखकर इस अनछुई सुन्दर,

सलोनी प्रकृति को
गॉव की फिर याद आयी।

घाट पर तालाब के
थीं कई बालाऍ नहाती
केश बिखराए घटाओं से
कर रही क्रीडा निराली
विहॅसती थी सभी आली।

कही चरवाहे चराते गाय भैंसें
खेलते हैं खेल तरु की छॉव में
खेत की मेडो से होकर
आ रहे करके पढाई

बालकों के झुण्ड
लडते बात करते
फिर कोई समझा रहे बाबा
'लडना नहीं अच्छा मेरे प्यारों'
देखकर सबकी सलोनी सूरते
गाँव की फिर याद आयी।।

नन्हा सा दीप

यह नन्हा सा दीप
यह माटी का दीप
नाम मात्र तेल
और नन्हीं सी बाती
नही कोई मीत
और नही कोई साथी
रात है अँधेरी
और राह है अजानी,
घोर अन्धकार को
भगाने की ठानी।
टिमटिमाता हुआ,
मग दिखाता हुआ
यह नन्हा सा दीप,
यह माटी का दीप।
नेह और ममता का
प्यार और समता का
कर्म और त्याग का
राग का, विराग का
प्रतीक है दीप
यह नन्हा सा दीप
यह माटी का दीप।।

गोमती सन्देश

गोमती कुछ शान्त सी है बह रही,
मन्द स्वर में यह कहानी कह रही -
इस सलोने देश के निर्माण मे,
अनगिनत बलिदान होकर रह गये,
जो बहे थे अथक श्रम के स्वेदकण,
देश के पावन मधुर फल बन गये।
आज उनके मान की गाथा लिखो।
आज उनकी शान की गाथा लिखो।
हर लहर बढ़ बढ कहानी कह रही
गोमती कुछ शान्त सी है बह रही
मन्द स्वर मे यह कहानी कह रही।

क्रान्ति लाओ शान्ति से, मृदु प्यार से,
दूर हो तुम युद्ध नद की धार से,
देश के निर्माण् हित रुकना नही,
मुश्किलों के सामने झुकना नहीं,
एकता, समता की सुन्दर भावना,
मित्रता, ममता की पावन कामना,
देश के सपने सुहाने गढ़ रही,
गोमती कुछ शान्त सी है बह रही,
मन्द स्वर में यह कहानी कह रही।
विश्व भर में युद्ध के बादल घिरे
लड रहे है आज तो कुछ सिरफिरे,

है समस्या पुत्र! अपने देश में
फिर भी सबके सुख की सुन्दर कामना,
शक्ति हो, दृढ़ता, अटल विश्वास हो
आज महके एकता की भावना,
छोड दो दुर्भावना, छोड़ो जलन,
यह धरा चन्दन सदृश शीतल रहे।
मैं प्रदूषित हो गयी प्यारे ललन
यातना दूषण की अब कैसे सहूँ।
सभी बहनों की व्यथा है एक सी
बेबसी की बात अब किससे कहूँ
गोमती कुछ शान्त सी है बह रही,
मन्द स्वर में यह कहानी कह रही।।

परिवर्तन

एक बार फिर परिवर्तन हो
गूँज उठे 'हुँ' महानाद का,
हो विदीर्ण उर अब प्रमाद का
जगे ज्योति अनुपम, वसुधा में
सुधा बहे निशिवासर क्षण क्षण
नव चेतनता के प्रसाद से
हो जाये संसार सुखाश्रित,
शिव का ही अभिनव नर्तन हो।
एक बार फिर परिवर्तन हो।।१।।

नयी ज्योति से पूरित जग हो,
पूरित जग में वीर्य प्रखर हो,
कायरता का नाम नहीं हो
बुरे विचारो का विनाश हो,
सबका ही समुचित विकास हो,
सभी निराश्रित साश्रय अब हो,
कण–कण में अणु–अणु में प्रतिदिन
नव सन्देश श्रवण हो,

एक बार फिर परिवर्तन हो।।२।।
पूर्व प्रकृति का नव विकास हो,
नव विकास में नव प्रकाश हो,
ज्योति अलौकिक, रङ्ग निराला,
जीवन का सर्वस्व भरा हो,

तेरी काट छाँट मे सङ्गिनि।
रङ्गिणि का आभास घना हो
इस परिवर्तन से सुखदायिनि।
महाक्रान्ति अर्जन हो।
एक बार फिर परिवर्तन हो।।३।।

पुष्पों में वह हास भरा हो,
जिसमे नव मधुमास तरा हो,
विहगों मे नव गान भरा हो,
पवन--गमन मे भास भरा हो,
जगती का नव दृश्य हरा हो,
कोयल के स्वर--युक्त गान से
नाच उठे हृद् इस प्रशान्ति का,
नव प्रभात के नव मिलाप में
अमृत युक्त गरल हो।
एक बार फिर परिवर्तन हो।।४।।

मानवता का स्थिर सुधार हो,
दानवता का पर भी प्रहार हो,
बर्बरता के हेतु नयी यह
सतृति की तैयारी, अविरल
गतिं से हो पावनमय सङ्गम
बने सुनिश्चित स्वर्ग--धरा का
सुरसरि, सूर्य--सुता का जैसे
तरें स्नान कर भव के नर,
शिव का सुन्दर उन्मीलन हो।

एक बार फिर परिवर्तन हो ।५

राम राज्य की रहे प्रबलता,
एक परिवार सदृश ससार
प्रेम के बन्धन में बँध जाय
सुखो का सुन्दर सरस समीर
मन्द गति से चलकर नव प्रीति
बढ़ाता रहे विजन के साथ
सभी हों आश्रयहीन सनाथ
पटे दुःख के सागर, उत्तुङ्ग
शिखर चढने में सुगम अपार
शिव का ही अभिनव नर्तन हो।
एक बार फिर परिवर्तन हो।।६।।

अहो शङ्कर का विकट त्रिशूल
चक्र श्रीपति का भी घहराय,
वज्र पुरहूत छोडकर दिव्य
करे ब्रह्मा भी बुद्धि सुजान
पुरानी रीति बनी अनरीति
बहें चारो दिशि से उञ्चास -
पवन, सागर आलोडित,
उमङ्गित होकर सुख के क्रोड
बीच, लेकर खेले नव खेल
पापमय संसृति का मर्दन हो,
एक बार फिर परिवर्तन हो।

कौन

सध्या सुबह कौन नित,
गाता रहता अपने रव में?
सौम्य छटा का बर्णन करता,
रत रहता नर्तन में?
कौन मधुर संदेश सुनाता
मलयानिल–सरसर में?
ध्यानाकृष्ट कौन करता
नर को अपने झर–झर में?
कौन सुषुप्तावस्था से
इस जग को जागृत करता?
कौन सुगन्धित मन्द वायु से
कान्ति शान्ति में भरता?
कौन हंस की भाँति निशा मे
निर्भय यात्रा करता?
और मुदितमन माणिक मोती
अम्बर मे बिखराता?
कौन सुबह धरती के ऑचल को
मोती से भरता?
कौन कान्त कमनीय शान्ति
मानव उर में है भरता?
कौन हतोत्साहित जीवो को
पथ पर लेकर चलता?
किसकी अमरगोद मे

यह जग अविरल गति से पलता?
वही प्रकृति सर्वत्र व्याप्त है
चिडियो की चहचह मे।
उसी प्रकृति की छटा व्याप्त है
फूलों की महमह में।
गाती प्रकृति नटी नित रहती
निर्झर की झरझर मे।
वही प्रकृति सदेश सुनाती
वातों की सरसर मे।
उसी प्रकृति की छटा निराली
जो फैली अम्बर मे।
प्रकृति गोद से चन्द्र—कान्ति
फैली इस अम्बरतल में।
रवि भी तो नित उसी कान्ति से
जग को जागृत करता।
दिन में ऊष्मा देकर
अगणित माणिक मोती करता।
उसी प्रकृति की न्यारी शोभा
जडी अनन्त स्थल पर।
उसी कान्ति की रजतमयी
चादर पडती इस भव पर।
सौम्या प्रकृति दयालु सदा
प्रेरित करती सत्पथ पर
उससे ही कल्याण विश्व का
अवनी पर, अम्बर पर।।

एक दीप प्रेम का

एक दीप स्नेह का,
एक दीप प्रेम का,
दीप दीप जल उठे,
वसुन्धरा दमक रही,
सजी है दीपमालिका,
घनाधकारघालिका।
उसी सुदीर्घ मालिका में,
दीप ये सँवार दो,
एक दीप स्नेह का
एक दीप प्रेम का।
दीप ये सुकर्म के।
दीप ये सुधर्म के
सिसक रही दया यहाँ
विहँस रही है क्रूरता।
प्यार के लिए यहाँ
तरस रही मनुष्यता,
उसी मनुष्यता को आज
स्नेह और प्यार दो।
उसी सुदीर्घ मालिका में
दीप ये सँवार दो।
एक दीप स्नेह का
एक दीप प्रेम का।

वह कौन है?

वह कौन है?
जो हमारे तुम्हारे और उनके बच्चों की
सपनों भरी दुनिया की बुनियाद
बार–बार हिला देता है
और बनने नहीं देता उनकी दुनिया
वह कौन है?

वह कौन है?
जो इनके कबूतरों के पीछे
अपने बाज छोड देता है,
और मजबूर कर देता है उन्हे,
दुबक दुबक कर
अपने घोसलो मे बैठ जाने को।
वह कौन है?

वह कौन है?
जो बार–बार इनकी पतग को
डोर से अलग–थलग कर देता है
और इन मासूमो को
दूसरी पतग, दूसरी डोर का आश्वासन देकर
बन्द कर देता है इनकी सिसकियॉ।
वह कौन है?

वह कौन है?

जो हवा मे गुडिया के साथ
उड़ रहे बच्चों की मुस्कान छीन लेता है
जो उसकी गुड़िया समेत
एक धमाके से
आकाश से
सागर की अतल गहराई में
गिरा देता है।

वह कौन है?

ज़रा सी धूप, ज़रा सी धूल ....

गॉव जाते हो,
जरा सी धूप ले आना।
यहॉ की धूप भी क्या
पसीना ही नहीं आता।
क्या करूँ इस धूप का?
गॉव जाते हो . ।।

गाँव जाते हो
ज़रा सी धूल ले आना
यहॉ की धूल भी क्या
सलोनापन नही इसमें
प्रेम की वह मूर्ति
जो सबके दिलों को जीत ले
बनती नही इससे
क्या करूँ इस धूल का?
गॉव जाते हो .... ।।

गॉव जाते हो
थोड़े फूल ले आना
यहॉ के फूल भी क्या
सुघर तो है
मगर खुशबू नहीं इनमें।
बताओ इन्हीं से श्रृंगार कर दूँ?

भाग्लौ का।
क्या करूँ इस फूल का?
गाँव जाते हो

गाँव जाते हो
थोड़े शूल ले आना।
यहाँ के शूल भी क्या
चुभन का एहसास तो होता नहीं
याद आँसू की दिला दे
हैं कहाँ तेवर?
बताओ क्या करूँ इस शूल का?
गाँव जाते हो . . ..।।

भर गया है मन
यहाँ की धूप से,
यहाँ की धूल से,
ऊबता है मन
यहाँ के फूल से,
यहाँ के शूल से,
गाँव जाते हो . ।।

चन्दन ही रहने दो

चन्दन है
मेरे गॉव की माटी
चन्दन ही रहने दो।
मत बनाओ सोना
इसे सोना मत बनाओ।
मुझे सोने से
स्वर्ण हिरण से
सख्त नफरत है।
सोना देखता हूँ
तो लगता है
सीता को
अपहृत करने का कुचक्र
चल रहा है।
माटी के पाँव पड़े छाले
बताते है
शहर गाँव में पहुँच गया
और
रावण आश्रम में।।

प्रेम हमारा स्पन्दन है

वन्दन है
अभिनन्दन है
वन्दन है भारतमाता का,
अभिनन्दन नवनिर्माता का,
भारत के नव निर्माता का।
श्रम ही सेवा, श्रम ही पूजा,
श्रम ही सर्वस्व हमारा है।
श्रमसीकर से जो दीप जले।
उनसे पाया उजियारा है।
भारत माँ के उन्नत ललाट पर,
केसरिया शुभ चन्दन है।
वन्दन है।।

यह देश महान् बने अपना,
गौरव के शिखरो को चूमे।
पूरा हो जन–जन का सपना,
ऐश्वर्य यहॉ नित–नित झूमे
प्राणों से अधिक सॅवारा है।
यह देश हमारा नन्दन है।
वन्दन है।।

जिसने नवतीर्थ दिये हमको
जिनसे यह देश महान् हुआ।

मानवता की गूँजी वाणी,
जग मे अपना सम्मान हुआ।
जन--जन को जिसने प्रेम दिया,
वह प्रेम हमारा स्यन्दन है।
वन्दन है।

चन्दन है मेरे देश की माटी

मेरे देश की माटी चन्दन है।
मन भावन इसका कण--कण है।
इसमे खिलते फूल सुगन्धित जग को करते हैं।
सुख--दु.ख में सबके मन को आनन्दित करते है।
रंग रंग के फूल देख शर्माता नन्दन है।

चन्दन है, चन्दन है।
मेरे देश की माटी चन्दन है।।

यह माटी बलिदानी इसकी अमर कहानी है।
रंग बिरंगी इस धरती का कहीं न सानी है।
इसे समर्पित तन--मन--धन इसको शत वन्दन है।

चन्दन है, चन्दन है।
मेरे देश की माटी चन्दन है।
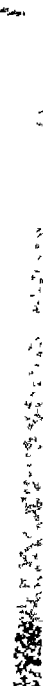
श्रम देवी का सौन्दर्य

सुन्दर श्याम वरन यमुना जल,
गगा जल सा मन है।
सीता का है रूप सलोना
राधा की चितवन है।
जिसका पद–रज पावन चन्दन,
उसको कोटि नमन है।। सुन्दर श्याम

जेठ दोपहरी में श्रम देवी,
तपा रही तन–मन है।
बनी उमा पचाग्नि तापती,
शिव से लगी लगन है।
उसकी तो श्रम ही पूजा है,
श्रम ही उसका धन है।। सुन्दर श्याम

उमड घुमड बरसे अषाढ घन,
भीगा हुआ वदन है।
सिमटा वसन दमकते तन से,
मोह रहा हर मन है।
ऊपर पानी नीचे पानी,
पानी ही जीवन है।। सुन्दर श्याम